बाजरा की खेती

प्रजातियाँ

- कम वर्षा वाले स्थानो के लिए उपयुक्त
- प्रजाति का चयन
- दो प्रकार की प्रजातियां

संकुल प्रजातियां

क्र. सं	प्रजातियां	पकने की अवधि	दाने की उपज (कु./ हे.)
1.	आई.सी.एम.बी.-155	80-100	18-24
2.	डब्लू.सी.सी.-75	85-90	18-20
3.	आई.सी.टी.पी.-8203	70-75	16-23
4.	राज-171	70-75	18-20

संकर प्रजातियां

क्र. सं	प्रजातियां	पकने की अवधि	दाने की उपज (कु./ हे.)
1.	पूसा-322	75-80	25-30
2.	पूसा-23	80-85	17-23
3.	आई.सी.एम.एच- 451	85-90	20-23

खेत की तैयारी

- हल्की दोमट या बलुई मिट्टी उपयुक्त
- जल निकास अच्छा होना चाहिए
- पहली जुताई मिट्टी पलटने वाले हल से तथा दो-तीन जुताइयां देशी हल या कल्टीवेटर से
- खेत भुरभुरा तथा समतल होना चाहिए

बीज की मात्रा एवं बुवाई

- 4 - 5 किलोग्राम बीज प्रति हेक्टेयर
- **बीज शोधन :** एक किलोग्राम बीज को 2.5 ग्राम थीरम से उपचारित करें

- बुवाई मध्य जुलाई से मध्य अगस्त तक
- लाइन से लाइन की दूरी 50 सेंटीमीटर
- बीज बोन की गहराई 3-4 सेंटीमीटर

खाद एवं उर्वरक

❖ संकर प्रजातियों –

- 80-100 किलोग्राम नाइट्रोजन
- 40 किलोग्राम फास्फोरस
- 40 किलोग्राम पोटाश प्रति हेक्टेयर

❖ संकुल या देशी प्रजातियों –

- 40 - 50 किलोग्राम नाइट्रोजन
- 25 किलोग्राम फास्फोरस
- 25 किलोग्राम पोटाश प्रति हेक्टेयर

- नाइट्रोजन की आधी मात्रा फास्फोरस एवं पोटाश की पूरी मात्रा बुवाई से पहले बेसल ड्रेसिंग में
- शेष नाइट्रोजन की आधी मात्रा बुवाई के 20-30 दिन बाद खड़ी फसल में

सिंचाई

- फूल आने पर खेत में पर्याप्त नमी होनी चाहिए।

खरपतवार नियंत्रण

- पहली निराई-गुड़ाई बुवाई के 15-20 दिन बाद
- कमजोर पौधों को उखाड़कर पौधे से पौधे की दूरी 10-15 सेंटीमीटर करनी चाहिए
- घने स्थान से पौधों को उखाड़कर रिक्त स्थान पर रोपित करें

- दूसरी निराई-गुड़ाई 35-40 दिन बाद
- बुवाई के एक या दो दिन के अंदर एट्राजिन 50% को 1.5-2.0 किलोग्राम प्रति हेक्टेयर

रोग नियंत्रण

- बाजरा का अर्गट रोग
- कण्डुआ रोग
- बाजरा की हरित बाली रोग

❖ बाजरा का अर्गट रोग :

- दाने के स्थान पर भूरे काले रंग के सीक के आकर की गाठें बन जाती है।
- संक्रमित फूलो में फफूंद विकसित होती है।
- प्रभावित दाने मनुष्यों एवं जानवरो के लिए हानिप्रद

नियंत्रण –

- बीज शोधन करके बुवाई करनी चाहिए।
- फूल आने पर मैन्कोजेब घुलनशील चूर्ण 2 किलोग्राम अथवा जीरम 27% तरल की 3 लीटर प्रति हेक्टर

कण्डुआ रोग:

- बीज आकर में बड़े, गोल अंडाकार तथा हरे रंग के
- बीजो में काला चूर्ण भरा रहता है।

नियंत्रण –

- बीज शोधन
- एक खेत में लगातार बाजरा की फसल नहीं लेनी चाहिए
- रोगग्रस्त पौधों को खेत से निकाल दे

बाजरा की हरित बाली रोग:

- बाली झाड़ू के समान
- पौधे बौने

नियंत्रण

- मैन्कोजेब 2 किलोग्राम अथवा जीरम 27% तरल की 3 लीटर प्रति हेक्टर
- रोगग्रस्त पौधों को निकालकर जला देना चाहिए।

कीट नियंत्रण

- तना छेदक
- पत्ती लपेटक
- टिड्डा
- कमला कीट

तना छेदक:

- सुंडियां तनो में छेद करके, अंदर से तनो को खाती है, जिससे मृतगोभ बनता है

रोकथाम -

- कार्बोफ्यूरॉन 3% ग्रेनुल, 20 किलोग्राम प्रति हेक्टर

पत्ती लपेटक कीट:

- सुंडियां पत्ती के दोनों किनारो को रेशम जैसे सूत से लपेटकर अंदर से खाती है।

रोकथाम -

- बीज शोधन करके बुवाई करनी चाहिए
- क्यूनालफास 25 ईसी 2 लीटर / हेक्टर

टिड्डा:

- शिशु तथा प्रौढ़ पत्तियों को खाकर हानि पहुंचाते है।

रोकथाम -

- मिथाइल पैराथियान 2%, 20-25 किलोग्राम प्रति हेक्टर

कमला कीट:

गिडारे पत्तियों को खाती है

रोकथाम -

- मिथाइल पैराथियान 2%, 20-25 किलोग्राम प्रति हेक्टर
- डाइक्लोरवास 70 ईसी 650 मिली लीटर प्रति हेक्टर

कटाई एवं उपज

उपज :

संकुल प्रजातियों -

- 18 से 20 कुंतल प्रति हेक्टेयर

संकर प्रजातियों -

- 20 से 25 कुंतल प्रति हेक्टेयर